क्या-क्या लिखूँ?

जितेन्द्र कुमार (शोधार्थी हिन्दी)
श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय भुड़कुड़ा, गाजीपुर उ0प्र0

खासा दिलचस्प शीर्षक है ना? सच बताऊं तो इस शीर्षक का नामकरण करने में मुझे भी बस उतना ही प्रयास करना पड़ा, जितना धर्मवीर भारती जी को अपने लेख 'ठेले पर हिमालय' के लिए करना पड़ा था। मुझे भी यह शीर्षक बस वैसे ही मिल गया। हुआ यूं कि मैं हिंदी के मौन साधक एवं प्रतिष्ठित निबंधकार पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी के ललित निबंध 'क्या लिखूं' को पढ़ रहा था, तभी मेरी नजर अखबार में उछलती मजहबी खबरों पर पड़ी। एक देश में सत्ता के तख्ता पलट के बाद आमजन की जो दुर्दशा हुई उससे अपना देश भी प्रभावित हुए बिना ना रह सका। हुआ दरअसल यह था कि नवाब अली, जिनका घर हिंदू बहुल गांव में था; बड़ी आनंद से जीवन काट रहे थे, तभी मजहबी दिक्कतों की आँच उनको आभास हुई। बेगम से सलाह-मशविरा किया। बेटों ने भी रजामंदी जता दी। फिर क्या था? चल पड़े बाँके पंडित के घर की ओर, जो उनके पक्के पड़ोसी और अनंतिम सलाहकार हुआ करते थे। बाँके गुरु ने खटिया बिछाई, नीम के पेड़ के नीचे बैठकी शुरू हुई। खुलते-खुलते नवाब अली खुल ही गए और अपने परिवार के द्वारा अनुमोदित अधूरे फैसले, जिस पर बाँके गुरु की पूरी मुहर लगनी बाकी थी, सुनाया- 'गुरुजी! सोचा है कि मैं धर्म परिवर्तन करके हिंदू बन जाऊं।' उनका इतना कहना ही था कि बाँके गुरु के माथे पर सिलवटें पड़ गईं। एक अजीब सी विस्मयाकृति उनके चेहरे से झलकने लगी। हालांकि थोड़ी ही देर में खुद को सामान्य दिखाने का असफल प्रयास करते हुए बोले- 'खां साहब! वह तो ठीक है, लेकिन..?' 'लेकिन क्या? गुरुवर!'- नवाब अली बीच में ही कूद पड़े। बाँके गुरु ने बात पूरी करते हुए अपना अघोषित फैसला सुनाया- 'वह तो ठीक है खां साहब! लेकिन...किस 'जात' में आएंगे?'

'किस 'जात'? मतलब?'- नवाब अली प्रत्याशित उत्तर की अभिलाषा में उनके चेहरे की ओर देखने लगे। तब तक बाँके गुरु ने शब्दों का जखीरा तैयार कर लिया था। बोलने लगे- 'देखो, खां जी! आपको अगर हिंदू धर्म में आना ही है या आपने हिंदू धर्म अपनाने का सोच ही लिया है तो अच्छी बात है लेकिन एक बात कहे देते हैं। हम आपको अपने धर्म में ले तो लेंगे लेकिन पहले यह बताइए कि कौन सी जाति में आओगे आप? इस गांव में पहले ही ठाकुर-बाह्मन बहुत अधिक मात्रा में हैं और अहीरों का काम तो आपसे होगा नहीं, तेली आप बन नहीं सकते। वो क्या है कि आप 'लदनी' का काम कर नहीं सकते ना। कोईरी बनना भी आपके वश की बात नहीं। सो आप शूद्र की कोई जाति चुन लो। हम बाऊ साहब से कहलवाके आपको दीक्षा-वीक्षा दे देंगे।'

'लेकिन... गुरुदेव!' - नवाब ने कहा। 'लेकिन क्या?'-बाँके पंडित ने कहा। नवाब ने कहा- 'गुरुदेव! मुझे आपका हिंदू धर्म बड़ा ही अच्छा लगता है। नवरात्रि में देवी पूजा, रामनवमी पर राम की पूजा, दीपावली पर लक्ष्मी-गणेश की पूजा, महीने-महीने कोई ना कोई तीज त्यौहार। बड़ा ही निराला धर्म है यह- हिंदू धर्म। गुरुदेव इसीलिए हमारे परिवार ने इस धर्म को अपनाने की सोची है। आपने तो देखा ही है कि कैसे धार्मिक दंगे में मेरे माता-पिता, भाई-बहन, चाचा एवं चचेरे भाई खुदा के पास चले गए थे। अगर मैं अपने गर्भवती पत्नी को लेकर इस गांव में भागकर शरण ना लेता तो क्या हम भी जीवित रहते?'

अब की बाँके गुरु थोड़ा सख्त होते हुए बोले- 'देखिए खां साहब! आपकी जूते की दुकान है, इसलिए आपको अगर हिंदू बनना ही है तो आप दलित ही बन जाइए। अन्य जातियों में जाने के लिए यहां कोई जगह नहीं।'

'ठीक है गुरुवर!'- नवाब ने हामी भर दी। शास्त्रोक्त विधि से धर्मांतरण हुआ। अब वे नवाब अली से नौमी राम बन चुके थे। इनका पूरा परिवार खुश था। घर में भोलेनाथ, हनुमान जी, दुर्गा माई, राम-सीता आदि देवी-देवताओं के फोटो लग गए। अब नौमी राम फूले न समाते थे आखिर वर्षों की जो धार्मिक पीड़ा थी वह जो समाप्त हो गई थी।

महीने बीत गए। बीच-बीच में नौमी राम की पत्नी किसी त्योहार के पड़ने पर व्रत भी रखने लगी थीं। शिवरात्रि का त्योहार नजदीक आने वाला था। शिवरात्रि के दिन वे सपरिवार गांव के प्राचीन शिव मंदिर में दर्शन-पूजन के लिए पंक्तिबद्ध होकर अपनी बारी के इंतजार में थे। अब तक दूर से ही बाँके गुरु को ही अंदर पूजा-अर्चना करते हुए देखा था। आज खुद भोलेनाथ को अपने हाथों से स्पर्श करके पुण्य लाभ कमाऊंगा ऐसी लिप्सा उनके रोम-रोम को पुलकित कर रही थी, तब तक उनकी बारी आ ही गई।

मंदिर में पुजारी रामसखी ने बाहर की ओर देखकर आवाज लगाया- 'चार-पांच लोग आ जाइए।' लेकिन ये क्या हुआ? रामसखी पुजारी ने ज्योंहि नौमी राम को मंदिर के कपाट पर देखा। उसकी तो त्यौरियां चढ़ गईं। आंखें लाल करके बोला- 'यहां मुल्लों-चुहड़ों के आने की सख्त मनाही है। फिर तुम कैसे आए? बहुत जल्दी यहां से भागो।'

'लेकिन...पुजारी जी!' - नौमी ने कहा। 'लेकिन-वेकिन कुछ नहीं मूरख! जल्दी हट यहां से। मेरे भगवान को अपवित्र कर डाला। अरे बाप रे! वो तो मैंने ऐन वक्त पर देख लिया नहीं तो ये तो पूरा मंदिर ही सत्यानाश कर देता। भाग यहां से जल्दी।'- पुजारी ने और क्रोध में आकर कहा।

पूरे गांव के सामने नौमी राम वा नवाब अली की कभी इतनी बेईज्जती नहीं हुई थी। वर्षों से पालित हिंदू देवी-देवता के पूजा करने की आस अब लुप्त हो चली थी। मय परिवार घर आए। दु:खी मन से समस्त देवताओं के चित्रों को हटाया। तब तक गांव के दलितों के कुछ मानिन्द उनके घर जा पहुंचे थे। उनके हाथों में अंबेडकर, पेरियार, रैदास, कबीर आदि के चित्र थे। थोड़े ही समय में ये चित्र दीवार पर टांगे जा चुके थे।

यह घटना महज एक घटना ही नहीं वरन् एक प्रश्न भी है कि हिंदू धर्म से लोग धर्मांतरण क्यों कर रहे हैं? अगर कोई अन्य धर्म से हिंदू धर्म में आना चाहे तो किस 'जाति' में आए? क्या उसे भी अपने भगवान को बदलना पड़ेगा? ऐसी बहुत सी बातें मेरे मन में कौंध रही थीं। मैं सोच रहा था कि किस-किस विषय पर क्या-क्या लिखूं? प्रश्न आपके समक्ष है। उत्तर की प्रतीक्षा में...।

***

बेटियाँ

- वन्दना गोंड़
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

पापा की परी से
जिम्मेदारी वाली बन जाती है,
बेटियाँ।
सौ नखरे करने वाली,
समझदार बन जाती है, बेटियाँ।
खूब पैसा उड़ाने वाली,
चुन-चुन के रखने वाली
बन जाती है, बेटियाँ।
थोड़े-से चोट लगने पर
चिल्लाने वाली,
हजार दर्द सहने वाली
बन जाती है, बेटियाँ।
जिस घर से अनजान थी,
उस घर की पहचान बन
जाती हैं बेटियाँ
हर बात पर हजार प्रश्न करने वाली,
आज चुप रहने वाली बन जाती है, बेटियाँ
किसी ने सच ही कहा है,
शादी के बाद बदल जाती है, बेटियाँ।

***